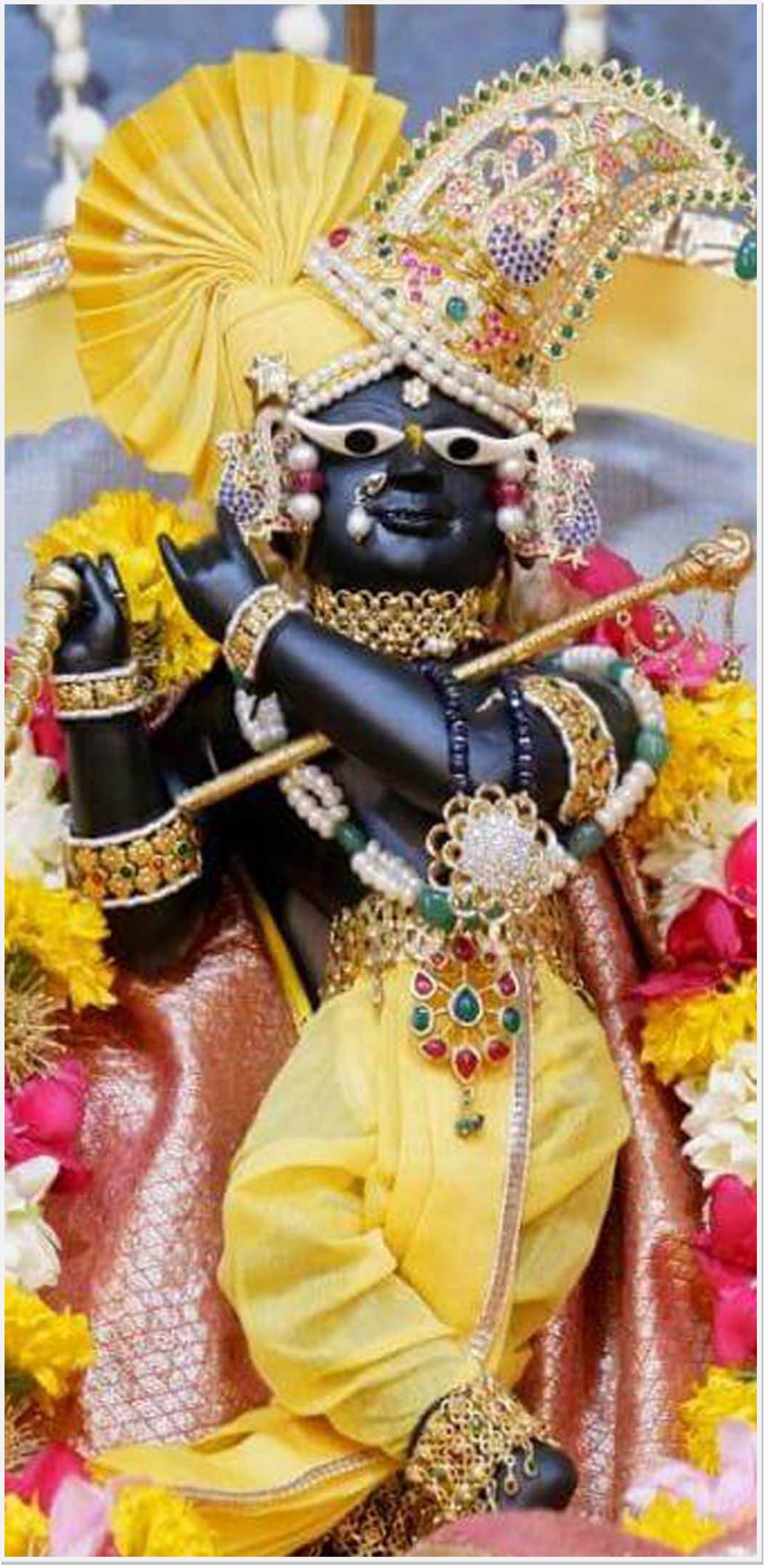

आमलकी – एकादशी

श्रीलगुरुदेव

(फाल्गुन शुक्ल)

एकादशी युधिष्ठिर ने कहा- हे कृष्ण! महाफलदायक विजया का माहात्म्य श्रवण किया, अब फाल्गुनी शुक्ल पक्षीय एकादशी जिस नाम से विख्यात है उसका वर्णन करें।

श्रीकृष्ण ने कहा- हे महाभाग युधिष्ठिर! मान्धाता के प्रश्न के उत्तर में महात्मा वशिष्ठ ने इस एकादशी की जो कथा बतलाई थी वह आपके निकट कह रहा हूँ।

इसका नाम आमलकी एकादशी है। यह एकादशी व्रत विष्णुलोक वैकुण्ठ को प्रदान करने वाला कहकर विशेष रूप से कथित है। इस दिन आंवले के वृक्ष के नीचे रात्रि जागरण करने से सहस्र गौ - दान का फल प्राप्त होता है। जिस प्रकार से यह सर्वपाप विनाशी आंवले का वृक्ष धरती पर उत्पन्न हुआ, वह तुम्हारे निकट वर्णन कर रहा हूँ।

प्राचीन काल में ब्रह्मा का दैनन्दिन प्रलयकाल (अर्थात् रात्रिकाल) आने पर स्थावर जंगम

एवं देवता, असुर और राक्षस सब कुछ नष्ट होने के बाद उस प्रलय समुद्र के जल में देवादिदेव परमात्मा भगवान ब्रह्मस्वरूप में अवस्थित हुए। तब उस जगत्रूप ब्रह्मा के वदन से चन्द्रतुल्य शुभवर्ण एक बूंद जल ऊँचा होकर भूमि पर गिरा । जल की उस बूंद से अकस्मात् एक विशाल आंवले का वृक्ष उत्पन्न हुआ। उसकी विस्तृत शाखा - प्रशाखा फल के भार से झुक गई थी। वह वृक्ष ही समस्त वृक्षों का आदि कहकर कथित है। इस वृक्ष से भगवान द्वारा ब्रह्मा,

प्रजा समूह, देव, मनुष्य, स्थावर जंगमादि सृष्टि हुई है।

देवगण और ऋषिवृन्द इस आश्चर्यजनक वृक्ष के दर्शन के लिए वहाँ उपस्थित हुए। उस अभिनव वृक्ष के दर्शन कर सभी विस्मित हुए, कारण बहुत से पेड़ों का पूर्व में दर्शन किया है एवं उनका नामादि भी ज्ञात है। किन्तु यह वृक्ष कहाँ से आया एवं इसका क्या नाम है आदि विषय की सभी चिन्ता करने लगे, उसी समय आकाशवाणी हुई, हे देवगण ! इस वृक्ष का नाम आमलकी है, यह परम वैष्णव

कहकर विख्यात है। इसके स्मरण मात्र से ही गौदान का फल प्राप्त होता है । दर्शन से उसका दुगुना, इसके फल भक्षण से इसका तीन गुना फल लाभ होता है। अतएव सब प्रकार से इसकी सेवा करना कर्त्तव्य है। यह सर्वपाप विनाशकारी है। इसके मूलदेश में भगवान श्रीविष्णु, उर्ध्व में पितामह ब्रह्मा, स्कन्ध में रुद्र अवस्थान करते हैं। इसकी शाखा समूह में मुनिगण, में प्रशाखाओं में देवगण, पत्तों में वसुगण, पुष्प में वायु एवं फलों में समस्त प्रजापति वास

करते हैं। ऋषिगण ने कहा- हे प्रभो! इस व्रत की विधि जानने की इच्छा है। किस प्रकार से इस व्रत का पालन होता है, व्रत का प्रणाम मंत्र एवं अन्यान्य तथ्यों का भी वर्णन करें।

विष्णु ने कहा- हे द्विज श्रेष्ठगण! इस व्रत में अन्य एकादशी की तरह प्रातः स्नानादि नियम ग्रहणकर पतित, चोर, पाखंडी, दुराचारी मर्यादाहीन और गुरुदाराभिगामी (गुरु पत्नी भोगी) मनुष्य के साथ आलाप न करें। दोपहर में फिर यथाविधि स्नान

करना। उसके पश्चात् सुवर्ण निर्मित परशुराम मूर्त्ति की पूजा करना। उस सुवर्ण के परिमाण का एक माषा (दस भाषा का एक तोला) अथवा उसका आधा या शक्ति अनुसार उसका भी आधा किया जा सकता है। उस मूर्त्ति की पूजा और होमादि समापन कर आंवले के वृक्ष के नीचे गमन करना।

पहले वृक्ष के चारों ओर सफाई करना। उसके बाद एक घट वृक्ष के सामने स्थापन करके मंत्र द्वारा उसमें पंचरत्न, पंचपल्लव, दिव्य गन्धादि, छत्र, पादुका, वस्त्र और

श्वेत चन्दनादि प्रदान करना। उसके बाद धान से पूर्ण एक पात्र स्थापन कर उसके ऊपर वह परशुराम की मूर्त्ति अधिष्ठित करें। बाद में पूजा और श्वेत वर्ण (सफेद) फलों के द्वारा अर्घ्य देकर रात्रि जागरण करना।

नृत्य, गीत, वाद्ययन्त्र, धर्मग्रन्थ, वैष्णवाख्यान पाठ और आलोचना द्वारा रात्रि बिताकर विष्णु नाम और महामन्त्र कीर्तन के साथ 108 या 28 बार आंवले के वृक्ष की प्रदक्षिणा करना । इसके बाद रात्रि को प्रभात काल में उस

मूर्त्ति की मंगल आरती आदि समाप्त कर श्रीनामपरायण ब्राह्मण की पूजा करना एवं 'परशुराम स्वरूप श्रीकेशव मेरे प्रति प्रसन्न हों' - इस प्रकार चिन्ता कर सुवर्ण, परशुराम मूर्त्ति, घट, वस्त्रयुगल, पादुका आदि पूजा के द्रव्य ब्राह्मण को प्रदान करके इस वृक्ष को स्पर्श, प्रदक्षिणा और प्रणामादि करना। तदनन्तर यथोचित रूप से स्नानादि समापन कर यथाशक्ति विष्णुभक्तों को भोजन कराकर परिवार के साथ स्वयं प्रसाद ग्रहण करें। इस एकादशी व्रत का पुण्य

अन्यान्य समस्त दान और यज्ञादि से भी अधिक है, इसमें कोई सन्देह न करें।

हे महाराज ! ब्राह्मणों के प्रश्न के उत्तर में विष्णु द्वारा इस प्रकार व्रत विधान वर्णनकर अन्तर्हित होने से उन ब्राह्मणों ने उनके उपदेशानुसार इस व्रत का पालन किया। यह व्रत अतिशय शुभफलदायक और सर्वपाप विनाशक है, इसमें बिन्दु मात्र सन्देह नहीं है।

श्रीलगुरुदेव